Pol. Sc
B.A. Part III    Paper – 6th   Unit-03

# कौटिल्य का षाड्गुण्य नीति या विदेश नीति
## Kautilya's Foreign Policy

कौटिल्य जिसे चाणक्य के नाम से भी जाना जाता है, ने 300 ईसा पूर्व "अर्थशास्त्र" नामक पुस्तक की रचना की थी। कौटिल्य उस समय में राजा चन्द्रगुप्त मौर्य के राजनीतिक सलाहकार तथा मंत्री थे। चन्द्रगुप्त मौर्य उस काल में सिकंदर महान और फारसी राजाओं के वंशजों से गंभीर हमलों और सैन्य आक्रमण का सामना कर रहा था।

कौटिल्य ने अपनी रचना अर्थशास्त्र में अपनी विदेश नीति के संबंध में षाड्गुण्य नीति अर्थात छह (6) लक्षणों वाली नीति का प्रतिपादन किया है।

कौटिल्य ने षाड्गुण्य नीति को परिभाषित करते हुए कहा है कि "इनमें दो राजाओं का कुछ शर्तों के साथ मेल हो जाना सन्धि, शत्रु का कोई उपकार करना विग्रह, उपेक्षा करना आसन, चढ़ाई (आक्रमण) करना यान, आत्मसमर्पण करना संश्रय और संधि, विग्रह दोनों से काम लेना द्वैधीभाव कहलाता है।" कौटिल्य के अनुसार देश काल और परिस्थितियों के अनुसार इस षाड्गुण्य-नीति में परिवर्तन किया जा सकता है। चन्द्रगुप्त मौर्य ने इसी षाड्गुण्य नीति का अपने विदेश नीति में पालन किया था।

1. सन्धि :— संधि दो राजाओं के बीच हुए समझौते को कहते हैं। कौटिल्य के अनुसार किसी भी राजा के लिए संधि करने की नीति का उद्देश्य अपने शत्रु राजा के शक्तियों को कम करना और स्वयं को बलशाली बनाना होता है। वस्तुतः पराजित राजा के साथ संधि वह अवसर है जब वह अपने सबल शत्रु से मिलकर उसे किसी न किसी प्रकार शक्तिहीन बनाने का प्रयत्न करता है। कौटिल्य ने संधि के तीन प्रकार बताए हैं। प्रथम दण्डोपनत संधि, द्वितीय, कोशोपनत संधि तथा तीसरा देशोपनत संधि।

2. विग्रह या युद्ध :— विग्रह का अर्थ युद्ध है। इस नीति का प्रयोग राजा को तभी करना चाहिए जब राजा शत्रु को निर्बल देखे, और उसकी युद्ध क्षमता पूर्ण हो और वह अपनी शक्ति के बारे में

पुरोहित का प्राबल्य हो। कौटिल्य के अनुसार "जब विजिगीषु राजा यदि यह समझे की मेरे देश में क्षत्रिय और कृषक अधिक हैं, मेरे देश में पहाड़, जंगल, नदियाँ किले बहुत हैं और मेरे राज्य में आने-जाने के लिए एक ही मार्ग है। शत्रु का मुकाबला करने के लिए मेरा देश हर प्रकार से समर्थ है, यदि ऐसा समझे तो विग्रह करना चाहिए।

लेकिन साथ ही कौटिल्य ने यह भी सलाह दिया है कि यदि विजिगीषु राजा यह देखे कि संधि और विग्रह में दोनों से समान लाभ की प्राप्ति हो सकती है तो विग्रह को त्याग कर संधि की नीति अपनानी चाहिए। युद्ध के संगठित और शक्तिशाली सैन्य बल का होना आवश्यक है। सेना के चार अंग होते हैं, पैदल सैनिक, हाथी, घोड़े, और रथ इनमें हाथी बलदिया है। सैनिकों में मुख्यतः क्षत्रिय ही हो, लेकिन आवश्यकता पड़ने पर वैश्य और शूद्रों को भी सेना में रखा जा सकता है। युद्ध में विजय प्राप्त करने के लिए तीन शक्तियों का होना आवश्यक है, उत्साह शक्ति, प्रभावशक्ति, तथा मंत्र शक्ति, इनमें उत्साह शक्ति पर कौटिल्य ने अधिक बल दिया है।

युद्ध के प्रकार :— कौटिल्य ने युद्ध के तीन प्रकार बतलाये हैं प्रकाश युद्ध, कूटयुद्ध तथा तूष्णी युद्ध। किसी देश या समय को निश्चित करके जो युद्ध की घोषणा की जाती है उसे "प्रकाश युद्ध" कहते हैं। थोड़ी सी सेना को अधिक दिखाकर भय पैदा कर देना "कूटयुद्ध" कहते हैं, तथा विष, औषधि आदि के प्रयोगों एवं गुप्तचरों आदि के प्रयोग से शत्रु का विनाश करना "तूष्णी युद्ध" कहलाता है।

विजिगीषु के प्रकार :— कौटिल्य ने विजिगीषु राजा के तीन प्रकार बताएं हैं, प्रथम, "लोभ विजयी" लोभ विजयी राजा भूमि और धन देने से संतुष्ट हो जाता है, अतः दुर्बल राजा धन आदि देकर उसे संतुष्ट करे। द्वितीय "असुर विजयी" असुर विजयी राजा धन भूमि स्त्री और प्राणों तक ले लेने के बाद संतुष्ट होता है। तृतीय, "धर्म विजयी" धर्म विजयी राजा गौरव और प्रतिष्ठा के लिए विजय प्राप्त करना चाहता है शत्रु के आत्म समर्पण से वह संतुष्ट हो जाता है। कौटिल्य ने धर्म विजयी राजा को श्रेष्ठ माना है।

Scanned with CamScanner

## युद्ध की परिस्थितियाँ

युद्ध करने से पूर्व विजिगीषु राजा को निम्नलिखित परिस्थितियों पर ध्यान देना चाहिए।

(i) राज्य की सभी प्रकृतियाँ स्वस्थ होनी चाहिए, एक प्रकृति के असन्तुष्ट होने से असफलता हो सकती है।

(ii) युद्ध के पूर्व उसे हानि-लाभ पर भी पूर्ण विचार कर लेना चाहिए अधिक लाभ होने पर ही युद्ध करना चाहिए।

(iii) उसे इस बात की सुरक्षा का प्रबंध करना चाहिए, कि उसकी अनुपस्थिति में आन्तरिक विद्रोह न हो।

(iv) युद्ध करने के पूर्व यह देखना चाहिए कि सैनिक शक्ति भौतिक साधन, कूटनीति आदि सभी स्तरों पर वह श्रेष्ठ है या नहीं? श्रेष्ठ होने पर ही उसे युद्ध करना चाहिए।

3. यान (Marching) :— यान का अर्थ है, वास्तविक आक्रमण। विजिगीषु राजा को इस नीति को तभी अपनाना चाहिए जब राजा अपने को सुदृढ़ समझे और उसे यह भी प्रतीत हो कि उसे आक्रमण के मार्ग को अपनाये बिना शत्रु को वश में करना संभव नहीं है।

यान की परिस्थिति में राजा यह देखे कि शत्रु "राजा" व्यसनों में लिप्त हो, उसके प्रकृति मण्डल में परस्पर कलह हो शत्रु राजा अग्नि जल व्याधि, संक्रामक रोगों के कारण अपने वाहन कर्मचारी और कोष की रक्षा न करने के कारण शत्रु क्षीण हो चुका हो तो ऐसी परिस्थिति में आक्रमण (चढ़ाई) कर देना चाहिए।

4. आसन यातटस्थता :— समय की प्रतीक्षा में चुपचाप बैठे रहना तटस्थ या आसन कहलाता है। राजा आसन की नीति तभी अपनाता है, जब वह देखे की वह शत्रु का विनाश नहीं कर सकता। आसन नीति को अपनाते हुए राजा को शक्ति अर्जन के लिए निरन्तर प्रयास की जानी चाहिए।

5. संश्रय (Shelter) :— संश्रय का अर्थ है, बलवान राजा का आश्रय। यदि राजा शत्रु को हानी पहुंचाने की क्षमता नहीं रखता साथ ही अपनी रक्षा करने में असमर्थ हो तो उसे बलवान (शक्तिशाली) राजा की शरण लेनी चाहिए। लेकिन

यह ध्यान रखना चाहिए कि जिस राजा का शरण लिया जा रहा है, वह अधिक शक्तिशाली हो। "कौटिल्य के अनुसार उसे यदि कोई बलवान राजा न मिले तो अपने शत्रु राजा का ही शरण लेनी चाहिए"।

6. द्वैधीभाव (Dual Policy) :— द्वैधीभाव का अर्थ है एक राजा से संधि तथा दूसरे से विग्रह करना यदि विजिगीषु राजा एक राज्य से संधि कर अपना काम निकाल सकता है और दूसरे से विग्रह कर उसका नाश कर सकता है तो उसे द्वैधीभाव (Dual Policy) अपनाना चाहिए। कौटिल्य का मत है कि "द्वैधी नीति के अनुसार शक्तिशाली राजा के साथ संधि और दुर्बल के साथ विग्रह करना चाहिए।

~~के अनुसार~~ कौटिल्य के मत में काल और परिस्थितियों के अनुसार जो नीति उपयुक्त हो, उसे ही अपनाना चाहिए, कौटिल्य की विदेश नीति (षाड्गुण्य) व्यवहारिक विचार धारा पर आधारित है। यह नीति इतनी तार्किक है कि सभी राज्य कम या अधिक रूप से इस नीति का प्रयोग करते हैं।

उक्त नीतियों के अतिरिक्त कौटिल्य ने साम, दाम, दण्ड, भेद जैसे चार उपायों का भी विधान किया है। "कौटिल्य का मत है कि दुर्बल राजा को शान्ति (साम द्वारा) धन देकर (दाम द्वारा) अपने वश में करना चाहिए और शक्तिशाली राजा को भेद तथा दण्ड के द्वारा"।

अतः उपरोक्त तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि कौटिल्य की षाड्गुण्य नीति या विदेश नीति उसके विवेक दूरदर्शिता का परिचायक है, कौटिल्य का अर्थशास्त्र एक ओर विजिगीषु को राज्य विस्तार करने का मार्ग दर्शन करता है, तो दूसरी ओर वह दुर्बल राजाओं को भी यह सीख देता है कि वह कैसे प्रबल राजा की अधिनता से बच सकते हैं। कौटिल्य केवल साम्राज्य विस्तार की बात नहीं करता, बल्कि साम्राज्यवादी नीति का प्रतिरोध किस प्रकार किया जा सकता है।

Scanned with CamScanner